बाँकीदास

ये आशिया शाखा के चारण थे। इनका जन्म जोधपुर राज्य के पचभदरा परगने के भांड़ियावास नामक गाँव में सं. 1828 में हुआ था। इनके पिता का नाम फतहसिंह और दादा का नाम शक्तिदान था। अलंकारों के प्रख्यात ग्रंथ 'जसवंत-जसो-भूषण' के रचयिता मुरारिदान इनके पौत्र थे। छोटी अवस्था में बाँकीदास ने अपने गाँव में थोड़ा-सा पढ़ना-लिखना सीखा और सोलह वर्ष की आयु में जोधपुर चले गए, जहाँ भिन्न-भिन्न गुरुओं से काव्य, व्याकरण, इतिहास आदि विभिन्न विषयों का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। तदनन्तर अपने ऊंचे व्यक्तित्व एवं ऊची योग्यता के सहारे महाराज मानसिंह के प्रीति-पात्र बन गए। महाराजा मानसिंह बाँकीदास की कवित्व शक्ति और विद्वत्ता पर मुग्ध थे। उन्होंने उन्हें अपना काव्य-गुरु बनाया और कालान्तर में कवि राजा की उपाधि ताजीम, पाँव में सोना, बाँह-पसाव आदि देकर इनकी प्रतिष्ठा बढ़ाई।

---

16. घासंता = घिसते हुए। खुवै = नष्ट करता है। मांणूं = वार्तालाप करूँ। गोबंद = गोविन्द। धापर = पेट भर कर।

Scanned by CamScanner

गुरु-शिष्य का संबंध सूचित करने के अभिप्राय से उक्त महाराजा ने इन्हें कागजों पर लगाने की मोहर रखने का भी मान दे रखा था, जिस पर निम्नलिखित शब्द अंकित थे—

श्रीमान् मान धरणि पति, बहु गुन रास।
जिन भाषा गुरु कीनौ, बाँकीदास॥

बाँकीदास संस्कृत, डिंगल, फारसी तथा ब्रजभाषा के अच्छे पंडित थे और आशु कवि होने के साथ-साथ इतिहास के भी सुज्ञाता थे। कहा जाता है, एक बार ईरान का कोई सरदार भारतवर्ष में भ्रमण करता हुआ जोधपुर आया और महाराजा मानसिंह से मुलाकात करते समय उनसे यह प्रार्थना की कि यदि आपके यहाँ कोई अच्छा इतिहासवेत्ता हो तो मैं उससे मिलना चाहता हूँ। इस पर महाराजा ने बाँकीदास को उसके पास भेजा। बाँकीदास के ऐतिहासिक ज्ञान, उनकी स्मरण शक्ति और उनके काव्य-चमत्कार को देखकर वह सरदार दंग रह गया और जिस समय जोधपुर से जाने को रवाना हुआ महाराजा से कह गया कि जिस आदमी को आपने मेरे पास भेजा था वह इतिहास ही का पूर्ण ज्ञाता नहीं, वरन् उच्च कोटि का कवि भी है। इतिहास का ऐसा पूर्ण और पुख्ता ज्ञान रखनेवाला और दूसरा व्यक्ति मेरे देखने में अभी तक नहीं आया। इसे समस्त भूमण्डल के इतिहास का भारी ज्ञान हैं। मैं ईरान का रहनेवाला हूँ, पर ईरान का इतिहास भी मुझसे अधिक वह जानता है।

बाँकीदास का अन्तकाल सं.1890 में श्रावण सुदी 3 को जोधपुर में हुआ था। इनकी मृत्यु से महाराजा मानसिंह को असीम दुःख हुआ और निम्नलिखित शब्दों द्वारा उन्होंने अपने शोकोद्गार प्रकट किए—

सद्विद्या बहु साज, बाँकी थी बाँका वसु।
कर सूधी कवराज, आज कठी गो आसिया॥1॥
विद्या-कुळ विख्यात, राज काज हर रहसरी।
बाँका तो विण बात, किण आगळ मनरी कहाँ[17] ॥2॥

इनके ग्रंथों के नाम ये हैं:—

(1) सूर छत्तीसी (2) सीह छत्तीसी (3) वीर विनोद (4) धवळ पच्चीसी (5) दात्तार बावनी (6) नीति मंजरी (7) सुपह छत्तीसी (8) वैसक वार्ता (9) मावड़िया मिजाज (10) कृपण दर्पण (11) मोहमर्दन (12) चुगल मुख चपेटिका (13) वैसवार्ता (14) कुकवि बत्तीसी (15) बिदुर बत्तीसी (16) भुरजाल भूषण (17) गज लक्ष्मी (18) झमाल नख-शिख (19) जेहल जस जड़ावं (20) सिद्ध राव छत्तीसी (21) संतोष बावनी (22) सुजस छत्तीसी (23) वचन विवेक पच्चीसी (24) कायर बावनी (25) कृपण पच्चीसी (26) हमरोट छत्तीसी (27) स्फुट संग्रह।

इन ग्रंथों के अतिरिक्त बाँकीदास के लिखे डिंगल भाषा के बहुत से फुटकर गीत और 2800 के लगभग इतिहास विषयक छोटी-छोटी कहानियाँ (वार्ता) भी उपलब्ध हुई हैं।

---

17. हे बाँकीदास! तेरी सुविधा रूपी सामग्री के कारण पृथ्वी पर बहुत बाँकपन(निरालापन) था। हे आशिया! आज उसे सीधी करके तू कहाँ चला गया? ॥1॥ विद्या और कुल में विख्यात हे बाँकीदास! तेरे बिना राज-काज की प्रत्येक बात को किसके आगे जाकर कहें? ॥2॥

Scanned by CamScanner

बाकीदास की गणना डिंगल भाषा के प्रथम श्रेणी के कवियों में की जाती है। इनकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित और सरस है; वर्णन-शैली संयत और स्वाभाविक है। इन्होंने नीति-उपदेश की बातें अधिक कही हैं जिनमें मौलिकता और चमत्कार विशेष दिखाई नहीं देता परन्तु वीर रस की उक्तियाँ इनकी कहीं-कहीं बहुत सुन्द बन पड़ी हैं—

सूतौ थाहर नींद सुख, सादूळौ बळवंत।
वन कांठै मारग बहै, पग-पग हौल पड़न्त ॥1 ॥
घाल घणाँ घर पातळा, आयौ थह में आप।
सूतौ नाहर नींद सुख, पौहरौ दियै प्रताप ॥2 ॥
केहर कुम्भ विदारियो, गजमोती खिरियाह।
जाँणै काळा जळद सँ, ओळा ओसरियाह[18] ॥3 ॥

बाँकीदास को अलंकारों का अच्छा ज्ञान था। इसलिए अलंकारों की बड़ी सुन्दर छटा इनकी रचना में स्थान-स्थान पर दिखाई देती हैं। इनके मुख्य अलंकार अप्रस्तुत प्रशंसा, हेतु, उदात्त और समुच्चय है। अप्रस्तुत प्रशंसा के तो इनको मास्टर हैंड ही समझना चाहिए—

गाज इते उखेड गज, माझळ बन तर मूळ।
जागै नहँ थह में जितै, सझ हाथळ सादूळ ॥1 ॥
सादूळौ वन साहिबौ, खाटे पग-पग खून।
कायरड़ा इण काम नूँ, जंबक कहै जबून ॥2 ॥
के दंती शृंगी किता, किता रखी वन जंत।
समझाया दे दे सजा, सादूळै बलवंत ॥3 ॥
मयँद धपावै मोतियाँ, हसाँ लाँघणियाँह।
रहै नहीं जुध रोकियौ, औ धाराँ अणियाँह[19] ॥4 ॥

नीति-उपदेश विषयक अपनी कविताओं में बाँकीदास ने दुर्जनों, कायरों मूंजियों, कुकुवियों, चुगलखोरों इत्यादि के स्वभाव-लक्षणों को बतलाया है और उनकी बड़ी भर्त्सना की है जो यथार्थ है। परन्तु भावावेश में कहीं कहीं इतने आगे बढ़ गए हैं कि साहित्यिक शिष्टाचार को भूल बैठे और वर्णन में अश्लीलता आ गई है। परन्तु सौभाग्य से ऐसे स्थल बहुत अधिक नहीं है। सामान्यतः बाँकीदास की रचना में ऊंची रुचि और ऊंचे आदर्शों ही के दर्शन होते हैं। उदाहरण—

---

18. बलवान सिंह अपनी माँद में सुख पूर्वक सोया हुआ है। पर उस वन के पास वाले मार्ग पर चलते हुए हाथी के मन में पगपग पर डबके पड़ रहे हैं ॥1 ॥ बहुत से घरों के मनुष्यों का नाश कर सिंह अपनी माँद में आया और सुखपूर्वक निद्रा में सो रहा। उसका प्रताप उसका पहरा देने लगा ॥2 ॥ सिंह ने हाथी का कुंभस्थल विदीर्ण कर दिया जिससे गजमुक्ता निकल पड़े। ऐसा प्रतीत होता था मानों काले बादल से ओले बरसे हों ॥3 ॥
19. हे गज ! जब तक सिंह अपनी माँद में जग न जाय और अपने पंजे को ठीक न कर ले तब तक तू गर्जना कर ले और वन के वृक्षों की जड़ें उखाड़ ले ॥1 ॥ वन का स्वामी सिंह पग-पग पर अपराध करता है। कायर जम्बुक इस काम को कठिन बतलाने हैं ॥2 ॥ बलवान सिंह ने कितने ही दाँतवालों, कितने ही सींगवालों और कितने ही नखवालों को सजा दे देकर सीधा किया ॥3 ॥ मृगेन्द्र भूखे हंसों को मोतियों से तृप्त करता है। वह युद्ध में तलवारों की धारों और भालों की नोकों से रोके नहीं रुकता ॥4 ॥

Scanned by CamScanner

दोहे

नर कायर आँणै नहीं, लूंण लिहाज लगार।
धोळै दिन छोड़ै धणी, अणी मिलै उण बार ॥1॥
बादळ ज्यूँ सूर धनुष बिण, तिलक बिना दुज पूत।
बनौ न सोभै मौड़ बिण, घाव बिना रजपूत ॥2॥
कीड़ी कण पावै नहीं, अदतारां घर आय।
ओर घरां सूँ आणियौ, जिको गमाड़ै जाय ॥3॥
दाता धन जेतो दियै, जस तेतौ घर पीठ।
जेतौ गुळ लै थाळियाँ, तेतौ जीमण मीठ ॥4॥

झमाल

काळी भवरावळि कळी भूँहाँ बाँकड़ियाँह।
क:ऊ प्रभात विकासिया, इसड़ी आँखड़ियाँह॥
इसड़ी आँखड़ियाँह किया म्रग वारणै।
सर मनमथ गा हारि क अंजण सारणै॥
खूबी न रही काय खतंगाँ खंजनाँ।
नैही है मुनिराज विसारि निरंजना[20]॥